प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 16 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

महात्मा गाँधी ने कोई 12 साल पहले कहा था–
मैं बुराई करने वालों को सजा देने का उपाय ढूँढ़ने लगूँ तो मेरा काम होगा उनसे प्यार करना और धैर्य तथा नम्रता के साथ उन्हें समझाकर सही रास्ते पर ले आना। इसलिए असहयोग या सत्याग्रह घृणा का गीत नहीं है। असहयोग का मतलब बुराई करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है।

आपके असहयोग का उद्देश्य बुराई को बढ़ावा देना नहीं है। अगर दुनिया बुराई को बढ़ावा देना बंद कर दे तो बुराई अपने लिए आवश्यक पोषण के अभाव में अपने–आप मर जाए। अगर हम यह देखने की कोशिश करें कि आज समाज में जो बुराई है, उसके लिए खुद हम कितने जिम्मेदार हैं तो हम देखेंगे कि समाज से बुराई कितनी जल्दी दूर हो जाती है। लेकिन हम प्रेम की एक झूठी भावना में पड़कर इसे सहन करते हैं। मैं उस प्रेम की बात नहीं करता, जिसे पिता अपने गलत रास्ते पर चल रहे पुत्र पर मोहांध होकर बरसाता चला जाता है, उसकी पीठ थपथपाता है और न मैं उस पुत्र की बात कर रहा हूँ जो झूठी पितृ–भक्ति के कारण अपने पिता के दोषों को सहन करता है। मैं उस प्रेम की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। मैं तो उस प्रेम की बात कर रहा हूँ, जो विवेकयुक्त है और जो बुद्धियुक्त है और जो एक भी गलती की ओर से आँख बंद नहीं करता। यह सुधारने वाला प्रेम है।

1. गांधी जी बुराई करने वालों को किस प्रकार सुधारना चाहते थे? 2

उत्तर : गांधी जी बुराई करने वालों को प्यार, धैर्य तथा नम्रता के साथ समझाकर सुधारना चाहते थे।

2. बुराई को कैसे समाप्त किया जा सकता है? 2

उत्तर : अगर दुनिया बुराई को बढ़ावा देना बंद कर दे तो बुराई अपने लिए आवश्यक पोषण के अभाव में अपने–आप मर जाएगी।

3. हम बुराई को क्यों सहन करते हैं? 2

उत्तर : हम बुराई को प्रेम की एक झूठी भावना में पड़कर सहन करते हैं। यदि हम बुराई को देखकर आँख बंद नहीं करते हैं और उसके विरोध में आवाज उठाते हैं तो उस बुराई का अंत निश्चित है। लेकिन हम बुराई को देखते हुए भी अपनी आँखें बंद कर लेते हैं तो हम झूठी भावना में पड़ जाते हैं।

4. 'प्रेम' के बारे में गांधी जी के विचार स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : गांधी जी के अनुसार प्रेम वह है जो विवेकयुक्त और बुद्धियुक्त हो जो एक भी गलती की ओर से आँख बंद नहीं करता। प्रेम वह नहीं जिसमें पिता गलत रास्ते पर जा रहे अपने पुत्र की पीठ थपथपाए, प्रेम वह भी नहीं जिसमें पड़कर पुत्र झूठी पितृभक्ति के कारण अपने पिता के दोषों को सहन करे।

5. असहयोग से क्या तात्पर्य है? 1

उत्तर : असहयोग का अर्थ बुराई करने वाले से नहीं, अपितु बुराई से असहयोग करना है।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : गांधी जी का प्रेम।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. मॉरीशस की स्वच्छता देखकर मन प्रसन्न हो गया। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जैसे ही मॉरीशस की स्वच्छता देखी, मन खुश हो गया।

2. गुरुदेव आराम कुर्सी पर लेटे हुए थे और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले रहे थे। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : गुरुदेव आराम कुर्सी पर लेटे हुए प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले रहे थे।

3. बालगोबिन जानते हैं कि अब बुढ़ापा आ गया। (आश्रित उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए)

उत्तर : अब बुढ़ापा आ गया। संज्ञा उपवाक्य है।

4. विपिन ने जो कार्ड छपवाए, वे शादी के थे। (रचना के आधार पर वाक्य भेद लिखिए)

उत्तर : मिश्र वाक्य।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया होगा, वह कितना बड़ा आविष्कर्ता होगा। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : पहले-पहल आग का आविष्कार करने वाला आदमी कितना बड़ा आविष्कर्ता रहा होगा।

2. खबर सुनकर वह चल भी नहीं पा रही थी। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : खबर सुनकर उससे चला भी नहीं जा सका।

3. देशभक्तों की शहादत को आज भी याद किया जाता है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : लोग आज भी देशभक्तों की शहादत को याद करते हैं।

4. मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलेज वालों ने नोटिस थमा दिया। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : मई महीने में कॉलेज वालों द्वारा शीला अग्रवाल को नोटिस थमा दिया गया।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. यह लड़की बहुत चालाक है।

उत्तर : गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, 'लड़की' विशेष्य का विशेषण।

2. मन्नू भंडारी सुशीला की छोटी बहन थी।

उत्तर : गुणवाचक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य 'बहन' का विशेषण।

3. दौड़कर बाजार चले जाओ।

उत्तर : पूर्वकालिक क्रिया, रीतिवाचक क्रिया-विशेषण।

4. मैं कल घायल था, इसलिए विद्यालय नहीं गया।

उत्तर : समुच्चयबोधक अव्यय, व्याधिकरण।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: $1 \times 4 = 4$

1. 'हास्य' रस का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर : हाथी जैसा देह, गेंडे जैसी चाल।
तरबूज-सी खोपड़ी, खरबूजे-से गाल।

2. निम्नलिखित पंक्तियों में रस पहचान कर लिखिए:
मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे,
यमराज से भी युद्ध को प्रस्तुत सदा मानो मुझे।

उत्तर : वीर रस।

3. 'रति' किस रस का स्थायी भाव है?

उत्तर : शृंगार रस का।

4. 'करुण' रस का स्थायी भाव क्या है?

उत्तर : करूणा, शोक।

5. निम्न काव्य पंक्तियों में कौन-सा रस निहित है?
"सोहित कर नवनीत लिए
घुटुरून चलत रेनू तन मंडित
मुख दधि लेप किए।"

उत्तर : वात्सल्य रस।

खण्ड-ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है वरना तो देशभक्ति भी आजकल मजाक की चीज होती जा रही है।

दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुजरे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिया। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है।

1. दूसरी बार मूर्ति देखने पर हालदार साहब को उसमें क्या परिवर्तन दिखाई दिया? 2

उत्तर : दूसरी बार मूर्ति देखने पर हालदार साहब ने पाया कि मूर्ति को सरकंडे का चश्मा पहनाया गया है। इससे उन्हें विश्वास हो गया कि देशभक्ति की भावना भावी पीढ़ी के मन में भी पूरी तरह भरी हुई है।

2. हालदार साहब को कस्बे के नागरिकों का कौन-सा प्रयास सराहनीय लगा और क्यों? 2

उत्तर : हालदार साहब को कस्बेवासियों द्वारा कैप्टन की मौत के बाद मूर्ति को चश्मा पहनाने का प्रयास सराहनीय लगा। क्योंकि उन्हें उम्मीद जगी कि अभी लोगों के अंदर की देशभक्ति की भावना मरी नहीं है। भावी पीढ़ी इस धरोहर को सँभाले हुए है।

3. "देशभक्ति भी आजकल मजाक की चीज होती जा रही है।" - इस पंक्ति में देश और लोगों की किन स्थितियों की ओर संकेत किया गया है? 2

उत्तर : प्रश्नोक्त पंक्ति देश के प्रति असंवेदनशील लोगों की ओर संकेत करती है। देश के लिए अपना घर–परिवार, जवानी, यहाँ तक कि अपने प्राण भी देने वालों पर लोग हँसते हैं, उनका मजाक उड़ाते हैं।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. 'बालगोबिन भगत' पाठ में किन सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया गया है?

उत्तर : बालगोबिन भगत पाठ में अनेक सामाजिक रुढ़ियों पर प्रहार किया गया है, जिसमें प्रमुख है– विधवा विवाह। बाल–गोबिन भगत ने विधवा विवाह के अतिरिक्त बहू से बेटे को मुखाग्नि दिलवाकर तथा मृत्यु पर शोक के स्थान पर खुशी मनाकर सामाजिक परंपराओं को तोड़ा है।

2. लेखक को नवाब साहब के किन हाव–भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

उत्तर : लेखक को नवाब साहब के हाव–भावों से यह महसूस हुआ कि वे लेखक से तनिक भी बातचीत करने के लिए उत्सुक नहीं है क्योंकि जब लेखक पैसेंजर ट्रेन में सेकंड क्लास में एक छोटे डिब्बे को खाली समझकर, दौड़कर उसमें चढ़ गया तो वहाँ एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफेद–पोश सज्जन जो बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे। डिब्बे में सहसा लेखक के कूद जाने से सज्जन की आँखों में एकांत चिंतन में विघ्न का असंतोष साफ दिखाई दिया। अकेले यात्रा के चक्कर में ही लेखक को लगा कि नवाब साहब ने खीरे खरीदे होंगे। लेखक को देखकर नवाब साहब असुविधा और संकोच का अनुभव करने लगे थे।

3. 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ में निहित संदेश स्पष्ट करें।

उत्तर : हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है। समाज में बनाए गए नियम और परंपराएँ भी पुरुषों द्वारा ही निर्धारित किए गए हैं। नारी के उत्थान और पतन के पीछे भी पुरुष का ही हाथ है। स्त्री–पुरुष एक–दूसरे के पूरक हैं, इसलिए इसमें संदेह नहीं कि सृष्टि के अस्तित्व के लिए इन दोनों का होना अनिवार्य है। नारी में प्रेम, करुणा, त्याग आदि गुण होते हैं जिनके बल पर वह मनुष्य को सफलता के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। हमारे यहाँ नारी की सदा पूजा की गई है। अतः समाज में व्याप्त परंपरा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए जो स्त्री–पुरुष में समानता को बढ़ाते हों।

4. लेखिका के लिए माँ का त्याग आदर्श नहीं बन सका, क्यों?

उत्तर : लेखिका एक सजग स्त्री थी, लेखिका प्रत्येक बात को तर्क की तुला पर तोलकर स्वीकार करने के पक्ष में थी। लेखिका के अनुसार अपनी असहाय और मजबूर स्थिति के लिए उसकी माँ स्वयं जिम्मेदार थी क्योंकि वह इसके विरुद्ध कभी आवाज नहीं उठाती थी। इसलिए वह लेखिका का आदर्श न बन सकी।

5. 'काशी में बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक–दूसरे के पूरक हैं'– कथन का क्या आशय है?

उत्तर : प्रश्नोक्त कथन का आशय यह है कि काशी में धार्मिक भेदभाव नहीं है। बिस्मिल्ला खाँ एक मुसलमान थे। वे अपनी मजहबी उसूलों का दृढ़ता से पालन करते थे, नियमित रूप से नमाज अदा करते थे, मुहर्रम के दिन शोक भी मनाते थे, फिर भी वे बाबा विश्वनाथ और संकटमोचन मंदिर को दिल से मानते थे। जब कभी वे शहनाई बजाते तो उनका मुख विश्वनाथ मंदिर की तरफ होता था। वे गंगा स्नान भी करते थे। उनमें दोनों धर्मों के प्रति अपार श्रद्धा थी।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद–नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस–निसि, कान्ह–कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सुर' तिनहीं लै सौंपो, जिनके मन चकरी।

1. 'तिनहीं लै सौंपौ' में किसकी ओर क्या संकेत किया गया है? 2

उत्तर : प्रश्नोक्त पंक्ति के माध्यम से कवि ने अस्थिर चित्त वाले लोगों की ओर संकेत करते हुए कहा है कि योग की शिक्षा वैसे लोगों को दो जिनका मन चकरी के भाँति घूमता है।

2. गोपियों को योग कैसा लगता है? क्यों? 2

उत्तर : गोपियों को योग कड़वी ककड़ी के समान जीवन में नीरसता और निष्ठुरता लाने वाला लगता है क्योंकि योग का रास्ता अग्नि के समान जलने वाला तथा घोर दुख देने वाला है।

3. 'हारिल की लकरी' किसे कहा गया है और क्यों? 2

उत्तर : हारिल की लकरी गोपियों को कहा गया है क्योंकि हारिल पक्षी अपने पंजे में एक लकड़ी को दिन–रात पकड़े रहता है। वह किसी भी स्थिति में लकड़ी छोड़ता नहीं है। यही स्थिति गोपियों की भी है वे दिन–रात श्रीकृष्ण को अपने मन में बसाए रहती हैं किसी भी सूरत में उन्हें वे भूल नहीं सकती।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. संगतकार की हिचकती आवाज उसकी विफलता क्यों नहीं है?

उत्तर : संगतकार का कार्य मुख्य गायक की यथास्थान सहायता करना है अतः वह अपने पेशे के अनुसार अपनी आवाज पर नियंत्रण रख मुख्य गायक के पीछे रहता है। अतः उसकी हिचकती आवाज विफलता नहीं अपितु उसकी गुणवत्ता है।

2. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : 'भ्रमरगीत' के माध्यम से सूरदास ने गोपियों के मन की व्यथा को साकार किया है। यहाँ जब उद्धव गोपियों को ज्ञान और योग का उपदेश देते हैं तब गोपियों की यही स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है कि वे श्रीकृष्ण के रंग में रंगी हैं, उन्हें योग और साधना नहीं चाहिए। उनके वाक्चातुर्य में हास्य और व्यंग्य का पुट है। उद्धव गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का पाठ पढ़ाते हैं तो गोपियाँ तीखे व्यंग्य का प्रयोग करती हैं। निर्गुण ब्रह्म की जगह श्रीकृष्ण की श्रेष्ठता और महानता को सिद्ध करती हैं। उद्धव के ज्ञान और योग का गोपियों ने उपहास उड़ाया है। इसके दो कारण हैं– एक तो वे श्रीकृष्ण के मित्र हैं और दूसरे यह कि उद्धव प्रेम की पीर से सर्वथा अनभिज्ञ हैं।

3. 'अट नहीं रही है' कविता के आधार पर वसंत ऋतु की शोभा का वर्णन कीजिए।

उत्तर : कवि ने वसंत की प्रकृति की शोभा का सुंदर उल्लेख किया है। ऐसा लगता है जैसे इस ऋतु में सुंदरता प्रकृति के कण–कण में समा जाती है। प्रकृति के कोने–कोने में अनूठी–सी सुगंध भर जाती है। जिससे कवियों की कल्पना ऊँची उड़ान लेने लगती है। चाह कर भी प्रकृति की सुंदरता से आँखें हटाने की इच्छा नहीं होती। नैसर्गिक सुंदरता के प्रति मन बँध कर रह जाता है। जगह–जगह पर रंग–बिरंगे और सुगंधित फूलों की शोभा दिखाई देने लगती है।

4. बादलों की गर्जना का आह्वान कवि क्यों करना चाहता है? 'उत्साह' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कवि बादलों से फुहार, रिमझिम, बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है क्योंकि कवि बादलों को क्रांति, विप्लव तथा विनाश का प्रतीक मानता है। 'निराला' प्रगतिवादी कवि हैं। विनाश के उपरांत ही निर्माण होता है। कवि बादलों की गर्जना को शक्ति का प्रतीक मानकर मनुष्य में उत्साह और साहस भरना चाहता है। गर्जना के उपरांत ही वर्षा होती है। मनुष्य में उत्साह, साहस, आत्मबल होगा तभी निर्माण संभव है। मनुष्य की कल्पनाएँ ही लक्ष्य प्राप्ति का साधन बनती हैं। अतः बादलों की गर्जना कविता में नवीन कल्पनाओं का ही प्रतीक है।

5. 'कन्यादान' कविता में बेटी को 'अंतिम पूँजी' क्यों कहा गया है?

उत्तर : माँ के लिए बेटी उस संचित पूँजी की तरह होती है, जिसे कोई मनुष्य आपत्तिकाल में काम आने के लिए बचा कर रखता है। माँ के लिए बेटी सुख–दुख की साथी होती है, वह उससे अपने मन की बात प्रकट करती है। माँ अपनी अंतिम पूँजी का कन्यादान तो करती है किंतु उसके जीवन में रिक्तता आ जाती है। यही कारण है माँ अपनी बेटी को अंतिम पूँजी समझती है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए– $3 \times 2 = 6$

1. 'माता का अँचल' पाठ में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं?

उत्तर : प्रस्तुत उपन्यास अंश 'माता का अँचल' में लेखक ने तीस के दशक की ग्रामीण संस्कृति का चित्रण किया है। तत्कालीन ग्राम्य संस्कृति में दिखावट–बनावट का सर्वथा अभाव था, किंतु आज की ग्रामीण संस्कृति में काफी परिवर्तन दिखाई देता है। आज गाँवों में भी शहर की तरह खेलने के लिए विभिन्न प्रकार के खेलों का सामान बच्चों को खेलने के लिए दिया जाता है। शहरों की अपेक्षा गाँव के बच्चे खेलने में अधिक कुशल होते हैं। बच्चे आधुनिक खेल खेलते हैं और आधुनिक तौर–तरीकों से रहते हैं। आवागमन के आसान साधनों के कारण बच्चे शहर के स्कूलों में पढ़ते हैं। बच्चों में भोलापन न होकर चुस्ती और चालाकी है। बच्चे आधुनिक मनोरंजन के साधनों टी.वी., सी.डी., टेपरिकार्डर, एफ.एम. तथा डी.वी.डी. से अपना मनोरंजन कर समय बिताते हैं। जैसे गाँव के रहन–सहन में परिवर्तन आया है वैसे ही गाँव के आचरण, व्यवहार, बोल–चाल तथा वेशभूषा में भी बदलाव देखा जा सकता है। गाँव के खान–पान से लेकर चाल–ढाल सभी पर शहरीकरण का प्रभाव दिखाई देता है।

2. "फाइलें सब कुछ हजम कर चुकी हैं।" इस कथन के आलोक में वर्तमान व्यवस्था की कार्य प्रणाली पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर : प्रश्नोक्त कथन वर्तमान व्यवस्था की पोल खोल देता है। आज भी सरकारी कार्यालयों में फाइलें सब कुछ हजम कर जाती है। वर्षों कार्य ठंडे बस्ते में पड़ा रहता है लोग परेशान होते रहते हैं परंतु न तो उस कार्यालय के अधीक्षक को फिक्र होती है और न ही सरकार को। जनता के समय का कोई महत्त्व नहीं। वे अपनी मर्जी से जब चाहें काम करेंगे अन्यथा वह कार्य वैसे ही फाइलों में दबा दम तोड़ता रहेगा। अस्सी प्रतिशत सरकारी कार्य सिर्फ कागजों पर होता है, कागजों पर सिंचाई होती है, कागजों पर गरीबी दूर होती है, कागजों पर बेरोजगारी भत्ते दिए जाते हैं, कागजों पर सारे विकास कार्य होते हैं और कागजों के भरोसे ही हमारी सरकार खड़ी होती है। कागजों पर हुई कार्यवाही अगर वास्तविकता में बदल जाए तो हमारा देश स्वर्ग बन जाएगा। परंतु क्या स्वर्ग क्या नरक हमारी अपनी कार्यप्रणाली है? लोग भूख से, अत्याचार से मर रहे हैं, पर हमें किसी से कोई मतलब नहीं कागजी कार्यवाही जारी है।

3. घुमक्कड़ी हमें 'स्व' की संकीर्णता से मुक्त करती है, तथा एक–दूसरे से जुड़ना सिखाती है, यह कथन कहाँ तक सत्य है?

उत्तर : प्रश्नोक्त कथन अक्षरशः सत्य है क्योंकि घुमक्कड़ी से हम अनेक लोगों के संपर्क में आते हैं और अपनी संस्कृति का

आदान–प्रदान करते हैं। हमेशा नया सीखने को मिलता है तथा ज्ञान में बढ़ोतरी होती है। घुमक्कड़ी से आपसी प्रेम बढ़ता है, सामंजस्य तथा समन्वय की भावना का विकास होता है तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना आती है। अगर घुमक्कड़ी नहीं होती तो हम कूप–मंडूक की तरह एक ही जगह पर जीवन गुजार रहे होते और उसी को सब कुछ समझते। हमें किसी भी दूसरी संस्कृतियों की जानकारी नहीं होती और हम आज भी अपनी प्राचीन संस्कृतियों के बंधन में बँधकर वनवासी का जीवन गुजार रहे होते।

खण्ड–घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए– 10

(1) भारतीय गाँव

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ ग्राम और राष्ट्र ✲ बेहतर साधन ✲ उपसंहार।

(2) राष्ट्रीय एकता

संकेत–बिंदु : ✲ राष्ट्रीय एकता का अर्थ ✲ राष्ट्रीय एकता की महत्ता एवं आवश्यकता ✲ राष्ट्रीय एकता के अभाव के दुष्परिणाम ✲ उपसंहार।

(3) राष्ट्र के निर्माण में नारी का योगदान

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ आधुनिक युग में नारी का स्थान ✲ स्त्रियों की उपलब्धियाँ ✲ उपसंहार।

उत्तर :

(1) भारतीय गाँव

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ ग्राम और राष्ट्र ✲ बेहतर साधन ✲ उपसंहार।

भूमिका– भारत गाँवों का देश है। आज भी यहाँ की कुल 70% जनता गाँवों में निवास करती है। भारत की आत्मा गाँवों में रहती है। हमारा गाँव हमारी पहचान है। गाँवों में किसान खेती करके अपना जीवन–यापन करते हैं। दूर–दूर तक फैले हुए हरे–भरे खेत, बाग–बगीचे, विभिन्न प्रकार के पक्षियों की चहचहाती आवाजें, सर्दी, गर्मी और वर्षा का पूरा आनंद केवल गाँवों में लिया जा सकता है। यहाँ प्रकृति को उसके असली रूप में देखा जा सकता है।

ग्राम और राष्ट्र– सूर्य भगवान की किरणें ग्रामीण जीवन को एक नया रूप देती हैं। सूर्य की पहली किरण का किसान के लिए अर्थ है– दिन का आरंभ और कंधे पर हल तथा हाथों में बैलों की जोड़ी को पकड़े अपने खेत की ओर चल देना। खेतों में वह दिनभर परिश्रम कर पसीना बहाकर सोने–चाँदी जैसे चमकीले व मोती की भाँति मोटे अन्न के दाने उगाता है, जो उसके परिवार तथा राष्ट्र का पेट भरते हैं, किंतु किसानों की स्वयं की स्थिति वर्तमान में भी दयनीय ही है।

बेहतर साधन– धीरे–धीरे गाँवों ने तकनीक का लाभ उठाना आरंभ कर दिया है। बिजली, नलकूप, कृषि के उन्नत साधन तथा वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग करते हुए किसान अपनी फसल को बढ़ा रहा है, लेकिन विचारों से वह आज भी उतना ही सरल और निर्मल है, जितना सदियों पूर्व था। गाँव में ग्रामीणों के बच्चों की शिक्षा का भी प्रबंध है। ये बच्चे पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा भी ग्रहण करते हैं। गाँवों में बिजली आ जाने से शिक्षा तकनीकी रूप से विकसित हुई है।

उपसंहार– इन सब सुविधाओं के होते हुए भी भारतीय गाँव कल और आज का अद्‌भुत संगम है। वे प्राचीन विचारधारा और नए विचारों के उत्कृष्ट समन्वय हैं। प्रस्तुत बिंदुओं के आधार पर स्पष्टतः कहा जा सकता है कि भारतीय गाँव हमारी संस्कृति की आत्मा है, जिसके अभाव में हम भारत देश की संपूर्णता की कल्पना भी नहीं कर सकते।

(2) राष्ट्रीय एकता

संकेत–बिंदु : ✲ राष्ट्रीय एकता का अर्थ ✲ राष्ट्रीय एकता की महत्ता एवं आवश्यकता ✲ राष्ट्रीय एकता के अभाव के दुष्परिणाम ✲ उपसंहार।

राष्ट्रीय एकता का अर्थ– राष्ट्रीय एकता का तात्पर्य– राष्ट्र के विभिन्न घटकों में परस्पर एकता, प्रेम एवं भाईचारा विद्यमान रहना है, भले ही उनमें विचारों और आस्थाओं के आधार पर असमानता क्यों न हो। राष्ट्रीय एकता किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानी गई है।

राष्ट्रीय एकता की महत्ता एवं आवश्यकता– एकता में असीम शक्ति होती है, जिस प्रकार छोटी–छोटी इकाइयाँ परस्पर संगठित होकर बलवती हो जाती हैं, उसी प्रकार राष्ट्र की छोटी–छोटी इकाइयाँ अर्थात् उसके नागरिक मिलकर राष्ट्र को बलवान बनाते हैं।

राष्ट्रीयता के लिए भौगोलिक सीमाएँ, राजनीतिक चेतना और सांस्कृतिक एकबद्धता अनिवार्य होती है। राष्ट्र की आंतरिक शांति तथा सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए और बाहरी दुश्मनों से रक्षा के लिए राष्ट्रीय एकता परम आवश्यक है। यदि हम भारतवासी किसी कारणवश छिन्न–भिन्न हो गए, तो हमारी पारस्परिक फूट को देखकर अन्य देश हमारी स्वतंत्रता को हड़पने की कोशिश करेंगे। यदि हमारा देश संगठित है, तो विश्व पटल पर इसे बड़ी शक्ति बनने से कोई नहीं रोक सकता। वह अपनी एकता तथा सामूहिक प्रयास के कारण सदा प्रगति के पथ पर अग्रसर रहता है।

राष्ट्रीय एकता के अभाव के दुष्परिणाम– जिस प्रकार समाज, जाति या परिवार में एकता का अभाव होने से वह विखंडित हो जाता है, उसी प्रकार राष्ट्रीय एकता के अभाव में राष्ट्र खंडित हो जाता है। प्राचीन समय में हमारे देश में लोग मिल–जुलकर रहते थे, परंतु धीरे–धीरे यहाँ के लोग धर्म के नाम पर बँट गए और अपने–अपने व्यक्तिगत हितों के लिए आपस में ही लड़ने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि हमें अंग्रेजों ने अपना

गुलाम बना लिया। सबसे अधिक दुःख की बात तो यह है कि हमें गुलामी के साथ–साथ विभाजन का दर्द भी सहना पड़ा। अतः हमें अपने इतिहास से सीख लेकर अपनी राष्ट्रीय एकता को बनाए रखना चाहिए, जिससे भविष्य में कोई हमारा शोषण न कर पाए।

उपसंहार– यद्यपि अंग्रेजों से तो हम आजाद हो गए हैं, परंतु अभी भी हम देख रहे हैं कि आतंकवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रीयता, जातीयता, अशिक्षा आदि ने देश को आक्रांत कर रखा है। ये सभी हमारी राष्ट्रीय एकता के विकास में बाधक हैं। अतः हमें जल्द–से–जल्द इनका समाधान करना होगा।

(3) राष्ट्र के निर्माण में नारी का योगदान

संकेत–बिंदु : * भूमिका * आधुनिक युग में नारी का स्थान * स्त्रियों की उपलब्धियाँ * उपसंहार।

भूमिका– भारतीय समाज में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सृष्टि की कल्पना नारी के बिना नहीं की जा सकती। नारी को ममता, करुणा, वात्सल्य आदि गुणों की सर्वश्रेष्ठ मूर्ति माना गया है। नारी ने अपने त्याग, बलिदान, नैतिकता आदि सद्‌गुणों से हमें परिचित कराया है। वर्तमान में नारी पुरुषों के साथ कदम–से–कदम मिलाकर चलने को तत्पर रहती है। फिर वह चाहे परिवार, नौकरी, राजनीति जैसे कार्य क्यों न हों। इन्होंने पुरुषों की भाँति प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है। इनकी क्रियाशीलता ने राष्ट्र के विकास में सकारात्मक सहयोग दिया है।

आधुनिक युग में नारी का स्थान– किसी राष्ट्र के निर्माण में उस राष्ट्र की आधी जनसंख्या अर्थात् स्त्री की भूमिका की महत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता। कृषि प्रधान भारत में कृषि में सक्रिय भूमिका निभाते हुए स्त्रियाँ प्रारंभ से ही अर्थव्यवस्था का आधार रही हैं, लेकिन पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की आर्थिक गतिविधियों का हमेशा से ही उचित रूप से मूल्यांकन नहीं किया गया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में नारी की स्थिति में सुधार हुआ। समाज सुधारकों ने नारी को पुरुष के बराबर अधिकार दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आधुनिकता के आगमन एवं शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाना प्रारंभ किया, जिसका परिणाम राष्ट्र की समुचित प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर होने के रूप में सामने आया है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 40 करोड़ कार्यशील व्यक्ति हैं, जिनमें 12.5 करोड़ से अधिक महिलाएँ हैं। भारत की कुल जनसंख्या में लगभग 39% कार्यशील जनसंख्या है, जिसमें लगभग एक चौथाई महिलाएँ हैं।

स्त्रियों की उपलब्धियाँ– आधुनिक समय में स्त्रियों ने अनेक सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाइयों को पार करते हुए नई ऊँचाइयों को छुआ है। शिक्षा के दिन–प्रतिदिन बढ़ते प्रचार के कारण महिलाओं को अपनी इच्छा के अनुकूल अवसर चुनने के मौके मिले। वर्तमान समय में शायद ही कोई क्षेत्र ऐसा होगा जहाँ उनकी पहुँच न हो। वकालत का क्षेत्र हो या इंजीनियरिंग का, प्रशासन का क्षेत्र हो या सैनिक सेवा का, चिकित्सा का क्षेत्र हो या राजनीति का, प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। श्रीमती इंदिरा गांधी, किरण बेदी, मीरा कुमार, मैरी कॉम, सानिया मिर्जा, कल्पना चावला आदि ने राष्ट्र के विकास में अतुलनीय कार्य किए हैं, जिनका राष्ट्र निर्माण में विशेष योगदान है।

उपसंहार– भारत में अदालती कानून की अपेक्षा प्रथागत नियमों का भी अपना मुख्य स्थान है। अतः केवल कानूनी प्रावधान ही महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए पर्याप्त नहीं होंगे, बल्कि लोगों की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने की भी आवश्यकता है। आवश्यकता इस बात की भी है कि भारतीय समाज महिलाओं को उनका उपयुक्त स्थान दिलाने के लिए कटिबद्ध हो। उनकी मेधा एवं ऊर्जा का भरपूर उपयोग हो तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनके साथ समानता का व्यवहार हो, जिससे उन्हें अपने विकास के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो सकें।

12. आपके क्षेत्र में पार्क को कूड़ेदान बना दिया गया था। अब पुलिस की पहल और मदद से पुनः बच्चों के लिए खेल का मैदान बन गया है। अतः आप पुलिस आयुक्त को धन्यवाद पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

सेवा में,
पुलिस आयुक्त
नई दिल्ली
दिनांक– 17 अप्रेल, 2019

विषय– पार्क को कूड़े से मुक्त करने के लिए धन्यवाद पत्र।

महोदय,

हम पिछले कई वर्षों से शालीमार बाग दिल्ली के BS ब्लॉक में रह रहे हैं, हमारे घर के पीछे बच्चों के खेलने के लिए पार्क डीडीए ने मुहैया कराया था परंतु डीडीए की लापरवाही एवं नागरिकों की सुस्ती के कारण पार्क कूड़ादान बन गया था। जिससे बच्चों को खेलने–कूदने के लिए स्थान नहीं बचा था। नागरिकों के मात्र एक होने एवं आपकी पहल एवं मदद से पार्क पुनः अपने पुराने रूप में लौट आया है और बच्चों के लिए उनका खेल का मैदान मिल गया है। इसके लिए हम सब ब्लॉकवासी आपको धन्यवाद देते हैं, इस कार्य के लिए हम आपके कृतार्थ हैं।

भवदीय

1. रवि कुमार
2. अंजली गुप्ता
3. सोनिया कर्दम
4. नरेश जैन
5. अमित दहिया

शालीमार बाग निवासी
दिल्ली–88

अथवा

पटाखों से होने वाले प्रदूषण के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

27/सी.4, नवजीवन कॉलोनी
जीवन पार्क, नई दिल्ली।
दिनांक– 5 नवंबर, 2019
प्रिय मित्र मनोज,
सप्रेम नमस्कार

तुम्हारा पत्र मिले काफी दिन हो गए। मन में चिंता हो रही थी तो मैंने तुम्हें पत्र लिखने का निश्चय किया। मित्र आजकल मेरे पास समयाभाव है जैसा कि तुम जानते हो अगले सप्ताह दीपावली है सारी तैयारियाँ करनी है। घर में पापा–मम्मी के अतिरिक्त और कोई है नहीं। हाँ दीपावली से मुझे एक बात याद आई की तुम भी दीपावली पर इस बार पटाखे मत लेना। पटाखे पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं। देश में दीपावली खुशियों, प्रसन्नता और प्रकाश का सबसे बड़ा पर्व है अतः इस मौके पर अधिकतम दीप एवं मोमबत्तियाँ जलाकर रोशनी फैलाएँ। पटाखे जलाकर अँधेरा नहीं। दीपावली पर एक दिन की आतिशबाजी और पटाखों से निकलने वाला धुआँ वातावरण को बुरी तरह प्रदूषित कर देता है कार्बन पार्टिकल्स कई दिनों तक वातावरण में तैरते रहते हैं जिससे आँख एवं श्वास बुरी तरह प्रभावित होता है इस वातावरण में जीना मुश्किल हो जाता है। उम्मीद है तुम पर्यावरण के प्रति जागरुक होंगे और शायद ये बातें अवश्य जानते होंगे। मित्र मैं पटाखे नहीं जलाऊँगा तुम भी मत जलाना एवं सभी जानने वालों को पटाखे नहीं जलाने के लिए प्रेरित करना। अरे! यार मैं पर्यावरण की बातें करते–करते तुम्हारा हाल–चाल लेना ही भूल गया। उम्मीद है तुम स्वस्थ होंगे। अपना एवं अपने परिवार का संपूर्ण समाचार पत्रोत्तर में देना। शेष बातें मिलने पर होंगी। चाचा–चाची को प्रणाम एवं छोटू को प्यार करना।

तुम्हारा मित्र
रमेश

13. पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए लगभग 25–50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

आओ अपना घर बचाएँ।

धरती को अगर है बचाना,
पर्यावरण रक्षा का लक्ष्य बनाना।
चारो तरफ बढ़ाओ जागरूकता
पर्यावरण है आज की आवश्यकता।
अगर रहेगा पृथ्वी का तापमान सामान्य,
तब धरती होगी स्वर्ग समान।

अथवा

विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा निर्मित हस्तकला की वस्तुओं की प्रदर्शनी के प्रचार हेतु लगभग 25–50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर :

प्रदर्शनी

विद्यालय प्रांगण में यहीं के विद्यार्थियों द्वारा हस्त निर्मित सुंदर एवं आकर्षक वस्तुएँ। आएँ देखें और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें। आपका प्रोत्साहन बच्चों का भविष्य है। बच्चों का भविष्य सँवारें।

निवेदक :
आदर्श बाल विद्यालय परिवार
वसंत नगर, जोधपुर, राजस्थान

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE